भारत सरकार
आयुष मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 2064

06 दिसम्बर, 2024 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

पारंपरिक औषधीय पद्धतियाँ

2064. श्री अनूप संजय धोत्रेः

क्या आयुष मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या आयुर्वेद के साथ-साथ अन्य पारंपरिक औषधीय पद्धतियों की व्यापक स्वीकार्यता ने विश्व स्तर पर आयुष क्षेत्र को प्रोत्साहन दिया है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या आयुष क्षेत्र की वर्ष 2025 तक वैश्विक बाजार में हिस्सेदारी में वृद्धि होने की संभावना है;

(ग) यदि हां, तो आयुष क्षेत्र की वर्तमान वैश्विक बाजार हिस्सेदारी सहित निर्धारित लक्ष्यों का ब्यौरा क्या है;

(घ) क्या आयुर्वेद की शिक्षा, अनुसंधान, वैज्ञानिक जांच के साथ-साथ इसका प्रचार-प्रसार तर्कसंगत और वैज्ञानिक मूल्यांकन प्रक्रिया के अनुसार किया जाना चाहिए और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और देश के लिए राज्य/संघ राज्यक्षेत्र-वार विशेषकर महाराष्ट्र के लिए प्रस्तावित रूपरेखा क्या है; और

(ङ) देश में आयुष क्षेत्र को प्रोत्साहित करने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा उठाए गए/उठाए जाने वाले कदमों का राज्य/संघ राज्यक्षेत्र-वार, विशेषकर महाराष्ट्र के संदर्भ में ब्यौरा क्या है?

उत्तर

आयुष मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
(श्री प्रतापराव जाधव)

(क) से (ग): डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों पर आधारित इंडिया एक्जिम बैंक के शोध के अनुसार, भारत का आयुष और हर्बल उत्पादों का निर्यात वित्तीय वर्ष 2014 में 2,208.6 करोड़ रूपये से दोगुना होकर वित्तीय वर्ष 2024 में 5,391.4 करोड़ रूपये हो गया है, जो इस अवधि के दौरान 9.3 प्रतिशत की मजबूत चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) दर्ज करता है। अप्रैल-सितंबर 2024 के दौरान भारत का आयुष और हर्बल उत्पादों का निर्यात लगभग 2886.7 करोड़ रूपये तक पहुंच गया है। इसके अलावा, वैश्विक स्तर पर बाजार हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए आयुष निर्यात संवर्धन परिषद (आयुषएक्सिल) की स्थापना की गई है।

(घ) और (ङ): मंत्रालय ने एनसीआईएसएम अधिनियम 2020 के प्रावधानों के तहत दिनांक 21.09.2020 को जारी की गई राजपत्र अधिसूचना असाधारण भाग (ii) खंड 3 (ii) के माध्यम से आयुर्वेद शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय आयोग (एनसीआईएसएम) की स्थापना की है।

आयुर्वेद, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी पद्धतियों में स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने के लिए राष्ट्रीय पात्रता प्रवेश परीक्षा (एनईईटी) अनिवार्य कर दी गई है। आयुष मंत्रालय ने आयुर्वेद के माध्यम से शिक्षण, प्रशिक्षण, अनुसंधान और स्वास्थ्य सेवा के उच्चतम मानक स्थापित करने के लिए एक अखिल भारतीय संस्थान, 4 राष्ट्रीय संस्थान और एक राष्ट्रीय महत्व का संस्थान अर्थात आयुर्वेद शिक्षण एवं

अनुसंधान संस्थान (आईटीआरए) की स्थापना की है। आयुर्वेद, योग और यूनानी चिकित्सा पद्धति में प्रशिक्षण और उपचार के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन का मानक भी प्रकाशित किया गया है।

केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस), आयुष मंत्रालय के तहत अनुसंधान गतिविधियों को आरम्भ करने के लिए शीर्ष निकाय है, जिसके देशभर में 30 केंद्रीय अनुसंधान संस्थान और क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान हैं। महाराष्ट्र में तीन संस्थान नामत: राजा रामदेव आनंदीलाल पोद्दार (आरआरएपी) केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, मुंबई, क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, नागपुर और क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, पुणे कार्यरत हैं। देश में पिछले 5 वर्षों में 41 होम्योपैथिक चिकित्सा महाविद्यालय स्थापित किए गए हैं और विशेष रूप से महाराष्ट्र में कुल 11 होम्योपैथिक चिकित्सा महाविद्यालय स्थापित किए गए हैं।

आयुष मंत्रालय स्वास्थ्य अनुसंधान पर समन्वय और सहयोग को बढ़ावा देने और विकसित करने के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी), वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर), उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (डीपीआईआईटी), वाणिज्य विभाग (डीओसी), पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफ और सीसी) और भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) के साथ सहयोग कर रहा है।

आयुर्वेद के प्रचार-प्रसार के लिए आयुष अनुसंधान पोर्टल विकसित किया गया है, जिसमें 43,614 साक्ष्य आधारित शोध लेख सूचीबद्ध हैं। इस पोर्टल का लिंक https://ayushportal.nic.in/default.aspx है।

आयुष मंत्रालय महाराष्ट्र सहित देश में आयुर्वेद के प्रचार-प्रसार के लिए अपनी आईईसी (सूचना, शिक्षा और संचार) योजना के तहत राष्ट्रीय और राज्य दोनों स्तर पर आरोग्य मेलों, आयुर्वेद पर्व, राष्ट्रीय सम्मेलनों एवं संगोष्ठियों के आयोजन और प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस मनाने जैसी विभिन्न गतिविधियों का आयोजन/सहायता भी करता है।

*****